Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, Oct-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

सिद्धांत सहिंता होरा केरल एवं रमल ज्योतिष

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

सिद्धांत सहिंता होरा केरल एवं रमल ज्योतिष

डॉ. राजकुमार तिवारी*

(ज्योतिष मार्तण्ड) एमए. पीएच.डी. (ज्योतिष विज्ञान) एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) बी.एड., एलएल.बी.

----------X----------

शोध विषय का संक्षिप्त परिचय –

हमने त्रिस्कंध ज्योतिष का उल्लेख किया है। किन्तु अन्य मतानुसार प्राचीन आचार्यों ने ज्योतिष के पाँच स्कन्ध माने हैं –

सिद्धान्तं संहिता होरा रमलं केरलन्तथा।

पंचस्कन्धं विजानीयात् वेदांगष्योतिषमिदम्।।

कुछ विद्वान् शकुनशास्त्र को पाँचवा स्कन्ध मानते हैं। परन्तु वास्तविकता है कि शकुन विषय तो स्पष्टतः सभी उपलब्ध ज्योतिषसंहिताओं में मिलता है, किन्तु केरल एवं रमल ये दोनों विषय वर्तमान में उपलब्ध संहिताओं में कहीं नहीं है, अतः इन्हीं दो स्कन्धों के साथ ज्योतिष पंचस्कन्धात्मक कहा जाता है। उनमें से त्रिस्कन्धात्मक ज्योतिष तो ब्राह्माजी द्वारा कथित है किन्तु रमल एवं केरल ये दोनों तो भगवान् शिव के द्वारा ही कहे गये हैं। रमल एवं शकुन एक ही सिक्के के पहलू हैं। बहुधा अनेक लोग जो मैकाले छाप शिक्षा एवं वातावरण में संस्कारित हुए हैं, वे यह भी कहते हुए सुने जाते हैं कि ज्योतिषशास्त्र भारत में पष्चिमी देशों से आया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि इसका प्रादुर्भाव भारत में हुआ और भारत से ही यह चारों ओर विश्व के अनेकों देशों में प्रसारित हुआ और भारत में इसका मूल लुप्त होकर कालान्तर में भारत में रूपान्तरित होकर आया है। रमलशास्त्र को शिवप्रोक्त कहा जाता है। रमलविद्या का अविष्कार भगवान् शिव ने पार्वती के मनोविनोदार्थ आठ पाशोंवाले एक मनोरंजक खेल का आविष्कार किया था जिसमें उनका मन रमा रहे, अतः इस खेल का नाम 'रमणकक्रीड़ा' पड़ गया।

महर्षि भृगु ने कठिन तपस्या द्वारा शिव-प्रणीत रमणकविद्या (रमल) का ज्ञान प्राप्त किया था ज्योतिषशास्त्र के अन्य रहस्यों में पारंड.गत होने के उपरान्त उन्होंने उस सम्पूर्ण ज्ञान को अपने पुत्र काव्य (शुक्रचार्य) को दिया। वह ज्ञान भारत में कुछ गिने-चुने भृगुवंशी (भार्गव) ब्राह्मणों के पास दीर्घकाल तक बना रहा। हयवंशीय क्षत्रियों के उपद्रव से पलायन कर जब भार्गवों को भारत के अपने मूल स्थान से इधर-उधर बिखरना पड़ा तब यह विद्या भारत में विलुप्त होने लगी। उधर भृगुवंशी महर्षि उर्व के साथ कुछ ब्राह्मण परिवार रक्तसागर के किनारे जाकर बसे, तब से वह निर्जन द्वीप उर्वद्वीप (अरब) कहलाने लगा। महर्षि उर्व भी रमणक विद्या के जानकर थे। पश्चिम में शुक्राचार्य के वंशजों ने सामुद्रिक तथा रमल के साथ ज्योतिषशास्त्र का समस्त उपयोगी ज्ञान काव्यमाला नामक ग्रंथ में लिपिबद्ध कर रखा था। यह काव्यमाला नाम अपभ्रंश होकर कब्बाला हो गया। यहुदी लोगों ने इसको मिश्र से प्राप्त किया। किन्तु मिश्र के लोगों के पास यह ज्ञान मिश्रर्षि द्वारा मिश्र में पहुँचा था। मिश्रर्षि कण्व गोत्रीय एवं कृष्ण यजुर्वेदीय ब्राह्मण थे।

उपलब्ध रमल – साहित्य का विवरण इस प्रकार है –

वर्तमान समय में जो रमलग्रन्थ अधिक प्रचार में हैं वे संस्कृत में तो हैं किन्तु उनमें पारिभाषिक शब्दावली अरबी भाषा की ही ग्रहण की गई है, जिससे यह भ्रान्ति उत्पन्न होती हैं कि यह विद्या मुसलमानों की है किन्तु यह अनुमान पूर्णतः गलत है। इसका प्रमाण 'बाबर' नामक यूरोपीय अन्वेषक को प्राप्त पाण्डुलिपि से मिल जाता है कि रमलविद्या मुसलमानों के आगमन से शताब्दियों पूर्व से ही अस्तित्व में है। यह पाण्डुलिपि गुप्तकाल में लिखी गई थी। बाबर के अनुसार यह पाण्डुलिपि ईसा से साढ़े तीन सौ से पाँच सौ वर्ष पूर्व लिखी गई थी। उसमें पारिभाषिक शब्द अरबी भाषा के न होकर संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं के है। जब कि इस्लाम इस संसार में कुल १४०० वर्ष पुराना है और यह पाण्डुलिपि उसके प्रादुर्भाव से एक सहस्त्रा वर्ष पूर्व की है। अर्थात् यह पाण्डुलिपि २५०० वर्ष पुरानी हैं।

गर्गसंहिता की पाशकावलि – श्रीशंकर बालकृष्णजी दीक्षित के अनुसार – 'तन्जौर के राजकीय पुस्तकालय में गर्गसंहिता की एक प्रति है। उसमें पाशकावलि नामक २३५ श्लोकों का एक प्रकरण है। उसके एक श्लोक में 'दुन्दुभि' शब्द आया है जो कि उपर्युक्त पुस्तक (बाबर की पाण्डुलिपि) में भी है। इससे सिद्ध होता है कि रमल-विद्या इसी देश की है। बाबर की पाशकावलि की भाषा से यह अनुमान होता है कि वह शकसंवत् (शालिवाहन) के प्रारम्भ काल के तीन-चार सौ वर्ष पहले की होगी। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय (आज से ढाई हजार वर्ष पहले) हमारे देश में यह विद्या थी। बाद में इसके मूल संस्कृत ग्रंथ लुप्त हो गये और उसके बाद अरबी ग्रंथों के आधार पर ग्रन्थ रचे जाने लगे।

रमलामृत – यह ग्रंथ विक्रम संवत १८०२ (सन् १७४५ ईस्वी) का रचा हुआ है। इसकी रचना संस्कृत में खान देश के प्रकाश नामक स्थान के निवासी श्री जयराम नामक औदीच्य ब्राह्मण ने गुजरात के सूरत नगर में की थी। इसमें श्रीपति तथा भोज के रमलग्रन्थों का उल्लेख है। रमलामृत में ८००० श्लोक हैं।

www.ignited.in

श्रीपति एवं भट्टोत्पल के रमलग्रन्थ – श्रीपति (शकाब्द ९६१) तथ भट्टोत्पल (शकाब्द ८८८ लगभग) के रमल ग्रन्थों का उल्लेख आफ्रेच सूची में मिलता है।

रमलचिन्तामणि – इस ग्रन्थ में लगभग ७०० श्लोक हैं, आनन्द आश्रम पूना में शक १६५३ की लिखी एक प्रति की सूचना मिलती है (सम्भव है कि वह वहाँ से प्रकाशित भी हुई हो), अतः वह शक १६०० से सौ-पचास वर्ष पूर्व ही लिखी गई होगी। इसके रचयिता कोई चिन्तामणि नामक ज्योतिषी थे।

रमलगुलजार –यह कोई यवनकृत ग्रन्थ रहा होगा और इसका मूल ग्रन्थ तत्कालीन अरबी या फारसी भाषा में रहा होगा। कहते हैं कि अकबर के दरबारी पं.बीरबल ने इसे तत्कालीन हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा देवनागरी में लिप्यन्तरण किया था। यह ग्रन्थ मुद्रित रूप से उपलब्ध है। इसमें पाशा फेंक कर तथा इष्टकाल द्वारा लग्न निकालकर दोनों के समवेत प्रयोग से प्रश्नों का उत्तर देना बताया गया है। इस ग्रन्थ में कुल १०४१ प्रश्न के उत्तर हैं। इसका बहुत प्रचार है।

रमलदानयाल –यह छोटी-सी पुस्तिका भी आजकल हिन्दी-उर्दू में उपलब्ध है। इसी को रमलप्रश्नसंग्रह भी कहत हैं। दानयाल इक ईरानी धर्मगुरू का (पैगम्बर का) नाम भी है। इसमें पाशकों द्वारा प्रस्तार करके लगभग ५२ प्रश्नोंकार उत्तर देने की विधि वर्णित की गई है। इस ग्रन्थ का रचनाकाल ज्ञात नहीं है। इसकी मूल भाषा फारसी थी।

रमलप्रश्नोत्तरी – इसके हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध हैं। कहते हैं कि नैपोलियन इसका विश्वासपूर्वक उपयोग करता था। इसमें ३२ प्रश्न हैं।

रमलनवरंग –इसकी रचना श्री रंगलाल गोस्वामी ने शक १८३५ (संवत् १९३८ विक्रमी) में की थी। ग्रंथ में कुल ४७१ श्लोक हैं। ग्रंथकार ने इस ग्रंथ को 'रमलनवरत्न' नाम भी दिया है किन्तु यह रंगलाल कृत अलग ग्रंथ है, जो रमलनवरत्न के रचनाकाल के लगभग ७१ वर्ष बाद लिखा गया है। ग्रंथ की भाषा अच्छी प्रान्जल संस्कृत है किन्तु पारिभाषिक शब्दावली अरबी भाषा की ही है। ग्रन्थ में रमलशास्त्र को अच्छी प्रकार से समझाया है और गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोधप्रबंध में आचार्य परंसुख उपाध्याय के प्रसिद्ध ग्रंथ रमलनवरत्नम् के नवरत्नों का वैज्ञानिक दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत ग्रंथ का नाम रमलनवरत्न है। रत्न का अर्थ रमणीय होता है, जो अपने आकर्षक गुण के द्वारा रत्नधारण करने वाले का चित्त प्रसन्न करे उसे रत्न कहते हैं। ग्रंथकार ने ग्रंथ के अध्यायों को रत्न संज्ञा दी है। इस प्रकार इस ग्रंथ को उसने नौ रत्नों (अध्यायों) से अलंकृत किया है। प्रथम अध्याय का नाम **'संज्ञारत्न'** है। इसमें पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या के साथ रमल के मूल सिद्धान्तों एवं तत्वों को समझाया गया है। इसमें ९२ श्लोक हैं। द्वितीय अध्याय का नाम **'बालबलरत्न'** हैं इसमें १०२ श्लोक हैं, तीसरे अध्याय का नाम **'प्रश्नोपकरणरत्न'**है जिसमें ३९ श्लोक हैं, चौथे अध्याय का नाम **'प्रश्नकथनरत्न'** है जिसमें २७३ श्लोक हैं, पाँचवे अध्याय का नाम **'प्रश्नावधिरत्न'** है जिसमें ५० श्लोक हैं, छठे अध्याय का नाम **'मुष्टिप्रश्नरत्न'** है जिसमें ६१ श्लोक हैं, सातवें अध्याय का नाम **'मूकप्रश्नरत्न'** हैं जिसमें २३ श्लोक हैं, आठवें अध्याय का नाम **'चौरादिनामकथनरत्न'** है जिसमें ४९ श्लोक तथा नौवें अध्याय का नाम **'संवत्सरफलज्ञानरत्न'** है जिसमें १२६ श्लोक हैं। इस प्रकार कुल ४१५ (आठ सौ पन्द्रह) श्लोक हैं।

इस ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १८६७ विक्रमी है। फाल्गुन शुक्ल तृतीया सोमवार को ग्रन्थकार ने इसे पूर्ण किया था। इस प्रकार रमलशास्त्र का यह विस्तृत ग्रंथ उज्जयिनी में लक्षगिरि नामक संन्यासी के आश्रम पर पूर्ण होने का उल्लेख ग्रंथकार ने किया हैं। ग्रंथ की शैली सुस्पष्ट है और रमलशास्त्र के ज्ञान को भली प्रकार से व्यक्त करने में सक्षम है। अपनी इस विशेषता के कारण इस ग्रन्थ की लोकप्रियता आज भी यथावत् है।

Corresponding Author

डॉ. राजकुमार तिवारी*

(ज्योतिष मार्तण्ड) एमए. पीएच.डी. (ज्योतिष विज्ञान) एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) बी.एड., एलएल.बी.

E-Mail – Suprbhatsw@gmail.com